ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(2): 33-36
www.allresearchjournal.com
Received: 08-12-2016
Accepted: 09-01-2017

डॉ. ज्वाला प्रसाद
सहायक कुलसचिव, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली-110007

Correspondence
डॉ. ज्वाला प्रसाद
सहायक कुलसचिव, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली-110007

राधावल्लभ त्रिपाठी रचित लघुकथा "करुणा" की समीक्षा

डॉ. ज्वाला प्रसाद

कथानक

लघुकथा संग्रह 'स्मितरेखा' की पाँचवीं कथा- करुणा है। इसे एक लघुकथा कहना अधिक संगत होना, क्योंकि कथानायक कित्तिफोम के जीवनसंघर्ष को निरूपित करती इस कथा में मुख्य चरित्र के अतिरिक्त किसी भी अन्य चरित्र को विकास का अवसवर नहीं मिला। सभी अन्य चरित्र मुख्य पात्र के इर्द-गिर्द विचरण करते हैं जैसा कि कथा में होता है।

कथा में थाई-संस्कृति का चित्रण है। कथासंबद्ध स्थान तो तथ्यात्मक है किन्तु घटना, स्थिति-परिस्थितियाँ, पात्र सभी काल्पनिक है। कथाकार ने कथा में स्वाभाविकता लाने के लिए कहीं-कहीं थाई भाषा का सहज प्रयोग भी किया है। पर कोष्ठक में उनके संस्कृत रूप दे देने से पाठक को कहीं असुविधा नहीं होती है। इस कथा में परम्परा में आये परिवर्तन को दर्शाया गया है।

पालबोट की नृशंसता का शिकर बने कथानायक कित्तिफोम (कीर्तिब्रह्म) को उसकी माता तोङ्ली थाईलैंड ले जाती है और वहाँ दूसरों के घरों में काम करती हुई अपने पुत्र का पालन-पोषण करती है। पर इस गुरु दायित्वजन्य कष्ट को अधिक दिन झेल न पाने के कारण तोङ्ली भी असमय में ही परलोक चली जाती है और भूख से मूर्छित कित्तिफोम को एक बौद्धभिक्षु साथ ले जाता है। वहाँ भी कित्तिफोम मिथ्या चौर्य अपराध में जेल चला जाता है। जेल से छूटने के बाद वह कारावास अधिकारी के मित्र सथित के यहाँ शरण पाता है और वहाँ गृहकार्य एवं वस्त्रव्यवसाय में उसका हाथ बंटाता है। सथित के मृत्यु के पश्चात् उनकी पुत्री विपदा से कित्तिफोम का विवाह होता है और उनसे सिरी नामक पुत्री उत्पन्न होती है। विपदा की विलासमय अनावश्यक आवश्यकता की पूर्ति कित्तिफोम नहीं कर पाता तो वह देह-व्यवसाय में लग जाती है। नित्य गृहकलह के कारण विपदा सिरी को लेकर किसी युवक के साथ पलायन करती है। बाद में कित्तिफोम व्यवसाय में सफल होकर प्रतिष्ठित व्यवसायी बन जाता है और पत्नी विपदा को अपनाने को खोजता रहता है। उन्हें पत्नी तो नहीं मिलती पर उसकी पुत्री सिरी चित्रिता नाम से उसे मिल जाती है जिससे विपदा की मृत्यु के बारे में जानकर कित्तिफोम निराश होता है। कथा में चित्रिता की उपस्थिति ऐसी स्थिति में होती है जैसे नाटकों एवं चलचित्रों में होती है। इस प्रकार कथा के अन्त में पाठक विस्मित हो जाता है। अनेक उतार-चढ़ाव के बावजूद कथा सुखान्त बन पड़ी है।

इस कथा में बौद्ध मठों की अराजकता एवं बौद्धभिक्षुओं की पतनशीलता की ओर भी संकेत किया गया है जो कथाकार की सूक्ष्मदृष्टि और युगीन प्रवृत्तियों की समझ का परिचायक है। कथारम्भ में कथानायक के साथ घटी दुर्घटनाओं का चित्रण है तो मध्य में गृहकलह के कारण उनकी व्यथा और अन्त में परिस्थितियों से समझौता करते हुए उनके विविध मनोविश्लेषणों का चित्रण है। नायक कित्तिफोम परिस्थितियों से हारता नहीं किन्तु हर बाधा के बाद और भी अधिक ऊर्जावान् होकर उभरता है।

देश, काल एवं वातावरण

आचार्य त्रिपाठी ने इस कथा में एक दूसरे देश की संस्कृति-सभ्यता को प्रदर्शित किया है। सम्पूर्ण कथा में कहीं भी कृत्रिमता नहीं लगती अपितु ऐसा लगता है कि लेखक ने थाई संस्कृति और इतिहास का निकट

से गहन अध्ययन किया है क्योंकि किसी भी स्थान की पृष्ठभूमि पर कथा लिखने के लिए वहाँ से सुपरिचित होना अत्यन्त आवश्यक है। लेखक थाईलैण्ड से पूर्णतया परिचित है जैसे- स्थानों के नाम- बैंकाक नगर का स्थानक ओलम्फोङ्। [1] कथानायक का निवास नगर च्याङ्माइनगर। [2] लुम्पिनी नामक उद्यानम्। [3] 'रोङ्रियन् धम्म' नामक धर्मविद्यालयः। [4] पात्रों के नाम भी थाई भाषा के हैं- नायक, कित्तिफोम। [5] राजा राम नवम फूमिफोलः अदुल्यथेजः [6] बौद्ध विहार का प्रधान भिक्षु- सिरिकितः। [7] कथानक का पिता- लियोङ्ग। [8] उनकी माता- चाङ्ग्ली। [9]

लेखक थाईलैण्ड के इतिहास से भी परिचित है। जैसे- थाईलैण्ड के चक्रिवंशीयशासक राम नामक उपाधि धारण करते हैं। 'राम प्रथम से लेकर राम नवम तक।' [10] कम्बोडिया देश के राजकुमार नारदेमसिंहानुक (नरदेव सिंहानुम) को मारकर पालपोट के निरङ्कुश शासन का वर्णन। [11]

लेखक थाईलैण्ड की संस्कृति और सभ्यता को भली प्रकार से जानता है, इसका पता इस बात से चलता है कि- थाईलैण्ड की बौद्ध धर्मीय संस्कृति का वर्णन लेखक ने किया है। "बौद्ध विहार में आश्विन मास के शुक्लपक्ष की अष्टमी को भगवान् बुद्ध की नवीन मूर्ति-निर्माणोत्सव होता है। जिसमें महिलायें आकर स्वर्णाभूषण अर्पित करती हैं।" [12]

बैंकाक में संवाहन के नाम पर होने वाले देह-व्यापार का भी लेखक ने बहुत अच्छे ढंग से विचार किया है। लेखक ने संस्कृत भाषा के साथ थाई भाषा का और भारतीय संस्कृति के साथ थाई संस्कृति का अन्तःसम्बन्ध दिखाया है। जैसे वहाँ के नाम संस्कृत-भाषा का अनुकरण करते हुए से प्रतीत होते हैं- ओलम्फोङ् (अलं ब्रह्म) नायक का नाम कित्तिफोम (कीर्त्तिब्रह्म) बैंकाक का थाई नाम (क्रुङ्थेप) (देवनगरः) अन्य भी बहुत से ऐसे नाम कथा में बीच-बीच में आए हैं। लेखक बताता है कि यहाँ के लोग अपने नाम के साथ राम, हनुमान, समृद्धि, सम्पत्ति, कृष्ण आदि शब्द लगाते हैं। [13]

लेखक बताता है कि यहाँ के चक्रिवंशीय शासक राम उपाधि को धारण करते हैं- 'अत्रत्याश्चक्रिवंशीयशासकाः राम इत्युपाधिं धारयन्ति। रामप्रथमात् रामाष्टमं यावत् महान्तो राजान इमं देशं शासति स्म। सम्प्रति राजा रामनवमो फूमिफोलः अदुल्यथेजः (भूमिबलः अतुल्यतेजाः) इह शास्ति।' [14]

थाईलैण्ड का बौद्ध धर्मीय जीवन ये सभी बातें थाई संस्कृति का भारतीय संस्कृति से सम्बन्ध को प्रकट करती है।

भाषा-शैली

आचार्य त्रिपाठी की भाषा सहज, सुन्दर व अत्यन्त स्वाभाविक है। निदर्शन के लिए जैसे- व्यापारी सथित के घर में पाँच साल रहने के बाद अठारह वर्ष के कित्तिफोम और नवयुवती विपदा के परस्पर अनुराग का वर्णन कवि करता है- 'कित्तिफोमो नाजानात् किमर्थमिदानीं सा तं मदालसैर्लोचनैर्निध्यायति। साकूतं तं कटाक्षच्छटाभिश्छुरयति। किन्तु दृष्टिपथे यदा यदा सा आयाति, तदा तदीये मनसि कुतकुतमिव भवति, श्वासाः अ श्वा इव द्रुतं धावन्ति।' [15] कित्तिफोम् संवाहनकर्त्रियों के चित्र देखते हुए सोचता है- 'एता युवतय आपाततो रमणीयाः प्रतिभान्ति परन्तु भवन्ति पर्यन्तपरितापिन्यः। एतासु सर्वा युवतयोऽपि न भवन्ति। नैका भवन्ति प्रौढाः। परन्तु चित्रे नवयुवत्य इव प्रकटीभवन्ति, प्रसाधनेन स्वकीयमायुः न्यूनादपि न्यूनं दर्शयितुं यतन्ते, निकटतोऽवलोकनेन बीभत्साः प्रतिभान्ति।' [16]

रस

कथा का नाम करुणा है, यह नाम अन्वर्थ है। सम्पूर्ण कथा करुण रस से परिपूर्ण है। कथानायक कित्तिफोम का जीवन जन्म से लेकर प्रौढ़ावस्था तक करुण की अभिव्यक्ति ही है। उसके जन्म से कुछ दिन बाद उसके पिता की हत्या, माँ के द्वारा कुछ दिन पालन, माँ के निधन के पश्चात् बाल्यावस्था में ही अनाथ हो जाना, अनाथ को बौद्ध विहार के प्रमुख भिक्षु ने पाला तो किन्तु वह भी चोरी करके उस अबोध के द्वारा स्वर्ण मूर्त्ति की तस्करी कराने लगा। पकड़े जाने पर भी कथानायक को ही एक वर्ष कारावास में बिताना पड़ा। जेल से निकलकर एक व्यापारी के पास नौकरी की तो उसकी बेटी विपदा से विवाह करना पड़ा। विपदा नामानुरूप थी उसने उसकी जिन्दगी में और कष्ट दिया। बेटी हुई सीरी कुछ अच्छा लगा पर कुलटा विपदा उसे लेकर प्रेमी के साथ भाग गई। बुरी तरह टूटा हुए कित्तिफोम का व्यवसाय ठप हो गया। वह नगर छोड़ कर दूसरे नगर जाकर व्यापार करने लगा, व्यापार तो बहुत बढ़ा पर जीवन आज भी एकाकी है और पत्नी और पुत्री का वियोग आज भी अन्तस् को रुलाता है। यह पूरी कहानी नायक को पाठक की दया का पात्र बना देती है। [17]

अलङ्कार

आचार्य त्रिपाठी की भाषा में अलङ्कार स्वतः अनुस्यूत रहते हैं। इस विषय में प्राचीन गद्यकार बाणभट्ट आदि से प्रभावित दिखते हैं। आचार्य त्रिपाठी ने इस कथा में विरोधाभास अलङ्कार का भी प्रयोग किया है- 'विवाहितोऽप्यविवाहितः। नैकाभिर्योषिद्भिः कृतसंसर्गोऽपि चिरकुमार इव सकुटुम्बोऽप्यकुटुम्ब इव।' [18]

उपमाः कई प्रकार की उपमा इस कथा में प्रयुक्त है। वाचकधर्मलुप्तोपमा- कपाटवक्षाः [19] कपाट इव वक्षः यहाँ इव वाचक शब्द चौडा साधारण धर्मलुप्त है। 'स्वस्तिकाष्ठे इव यीशु- मानवता सङ्कटे अलम्बत' [20] वेदानुकारिणी उपमा- 'अथ एकदा उर्वारुकमिव जीवनबन्धान्मृत्युः सथितं मुमोच।' [21] यह उपमा वैदिक मन्त्र- त्र्यम्बकं यजामहे के उत्तरार्ध 'उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मक्षीयमामृतात्' का अनुकरण करती है। काव्यानुकारी- 'चित्रे निवेश्य परिकल्पितसत्त्वयोगेव अस्पृशतेव विधात्रा विरचिता विभाति इयं चित्रीया।' [22] यह अभिज्ञानशाकुन्तलम् के शकुन्तला वर्णन का अनुकरण है।

उत्प्रेक्षाः स्वप्नं पश्यन्निव, प्रेताविष्ट इव कितिफोमो अवस्थानकात् बहिरायया' [23] इस प्रकार के अनेक अलङ्कारों के उदाहरण दिए जा सकते हैं।

सम्प्रेषण

यह कथा भारतीय फिल्मों की तरह 'फ्लैश बैक' में चलती है। जहाँ कथानायक के स्मरण में आधी से ज्यादा कहानी जाती है और वर्तमान में बहुत कम। कथानायक के द्वारा लेखक ने बौद्ध विहार के मुख्य भिक्षुक द्वारा ही भगवान् बुद्ध की मूर्ति चुराना बौद्ध धर्म का पतन दिखाया है। यद्यपि बौद्ध धर्म शुद्धाचरण पर अवस्थित है फिर भी इस बौद्ध देश की महिलाओं द्वारा वेश्यावृत्ति को प्रमुख व्यवसाय के रूप में अपनाने का चित्रण वहाँ की वर्तमान स्थिति को दिखाता है।

लेखक ने कथा को सुखान्त बनाया है। वह कथानायक को उसकी पुत्री के मिलने के रहस्य को कुछ हद तक बनाए रखने में सफल हुआ है। पर रहस्य खुलने से पहले ही आभास हो जाता है। कम से कम हिन्दी फिल्मों के दर्शकों को तो हो ही जाता है।

स्मितरेखा

किसी पालूत जानवर (कुतिया) के पीछे कथानायक की दीवानगी ही अन्तिम कथा स्मितरेखा का बीज है। उससे अतिशय प्रेम के कारण जब वह जानवर इस मृत्युलोक से विदा लेता है तो कथानायक ऐसे सदमे में चला जाता है जैसे उसने अपने परिवार में किसी प्रिय व्यक्ति को ही खो दिया हो। जब वह बहुत दिनों के बाद मिले अपने पुराने मित्र से अपनी उस व्यथा को व्यक्त करने लगता है तो मित्र यह समझकर उससे सहानुभूति जताता है कि जैसे उन्होंने अपनी प्रियतमा पत्नी ही खो दी है। पूरी कथा में जिज्ञासा बनी रहती है। कथा सुनाने के बाद कथानायक एक स्मितहास्य भी व्यक्त करता है। अन्त में जब वस्तुस्थिति का पता चलता है तो वह मित्र मन ही मन हँस पड़ता है और उसे यह तथ्य नहीं बताता है कि वह वस्तुस्थिति को गलत समझ बैठा था। कथा का उपसंहार मित्र की इस पूर्वानुभूति से किया जाता है कि अक्सर किसी करुणापूर्ण वर्णन के बाद ऐसी स्मितरेखा कथानायक की मुखमुद्रा में झलकती रही है जैसे उक्त अवसर पर देखने को मिली।

कथानक

दो मित्र रहमान अली और रघुवीर दस वर्ष बाद बाजार में अचानक मिल गए। रहमान अली के चिन्तन के माध्यम से पता चलता है कि रघुवीर बचपन से ही रहस्यमय है। वह उसकी अनेक घटनाओं के बारे में सोचता है। रघुवीर के अनुरोध से रहमान उसके घर जाता है। घर बहुत सुरुचिपूर्ण है। चाय के साथ रहमान के कुशल पूछने पर रघुवीर रोता हुआ सा कहता है, कि उसका तो सब कुछ नष्ट हो गया। वह बताता है कि उसकी प्राणप्रिया चली गई।

फिर वह अपनी प्रिया की कथा बताता है। एक बार मैं उद्यान में सफाई कर रहा था कि वह आकर मेरे पैरों में सिर रखकर निरीह नयनों से देखने लगी। जब वह कुछ दिन बाद भी नहीं आई। उसने अपना नाम भी नहीं बताया। तब मैंने उसका नाम निम्मी रख दिया। मैंने उसकी पहचान के लिए अखबार में विज्ञापन भी दिए फिर भी उसका कोई परिजन नहीं आया।

मेरे घर में कोई नहीं है, मैं चिरकुमार हूँ। पर जब से वह घर में आई मैं गृहस्थ सा हो गया। जो कुछ उसे अच्छा लगता, वह उसे लाकर देता। वह सर्वथा मुझ पर विश्वास करती। यदि मैं आने में आधा घण्टा भी देर कर देता तो वह कोपभवन में प्रविष्ट हो जाती है। मेरे हाथ से केवल दो चार निवाले ही खाती। ऐसे प्रगाढ़ प्रेम हमारे बीच हो गया। वह भी सारे घर की रक्षा सावधानी से करती है। वह मेरी गृहस्थी का केन्द्र हो गई। इसी क्रम में वह जवान हो गई, उसके कटाक्ष ओर पैने हो गए। उसके लिए मैं चिन्तित हो गया, पहले ही गली में कई गुण्डे घूमते रहते हैं किसके साथ इसका विवाह करूँ यही चिन्ता हो रही थी। कई वर ढूँढे पर कोई नहीं मिला। एक युवा वर मिला मेरे पड़ोसी का पालित पुत्र। किन्तु तभी वज्रपात हो गया वह कैंसर से ग्रस्त हो गई। मैंने डॉक्टर को दिखाया तो उसने ऑपरेशन की सलाह दी मैंने कुछ दिन पहले उसके पेट पर छोटी सी गाँठ देखी थी पर ध्यान नहीं दिया वही आज कैंसर हो गई।

ऑपरेशन कर दिया तब भी वह ठीक नहीं हुई। धूर्त डॉक्टर आश्वासन देते रहे। पर एक दिन उसकी हालत अधिक बिगड़ गई मैंने कार्यालय से अवकाश ले लिया। उस भयानक दिन वह मेरी गोद में लेटकर अपने मुँह को मेरे सीने पर रखकर सूँ सूँ करती रही और कुछ देर बाद वह ध्वनि बंद हो गई तो मैंने समझा वह सो गई किन्तु जैसे ही मैं उसे बिस्तर पर लेटाने को हुआ देखा कि उसकी गर्दन एक तरफ लटकी हुई है। मैं विक्षिप्त सा हो गया। कुछ परिचारकों ने कहा कि यहीं श्मशान में इसकी अंतिम क्रिया कर दो पर मैं घर ले आया और गढ्डा खोदकर उसमें उसे लिटाकर खुद ही उसे सुपुर्दे खाक कर दिया।

रहमान ने कहा- ये तुमने क्या किया तुम्हारे धर्म में तो मृतक का दाह संस्कार किया जाता है।

रघुवीर बोला- रहमान भाई क्या कहते हो? निम्मी का क्या धर्म। वह महान् आत्मा किसी धर्म को नहीं मानती थी। देखो उसकी स्मृति अब भी मेरे पास है। ऐसा कहकर एक फोटो एलबम लाकर दी रहमान फोटो देखते-देखते आकाश से भूमि पर आ गिरा उसने कहा तो वह मानवी नहीं थी।

रघुवीर ने कहा- तुमने ठीक कहा वह मानवी नहीं, वह कोई देवी थी। चित्र संग्रह में पामेरियन् जाति की किसी कुतिया के चित्र थे। रघुवीर के मुख पर एक छोटी सी मुस्कान थी।

रस

पूरी कथा करुणा में पाठक को सराबोर करती है किन्तु अन्त में कथा की परिणति हास्य में होती है। इस कथा का अङ्गीरस करुण को माना जा सकता है क्योंकि पूरी कथा में करुण है भले ही अन्त हास्य से होता हो। जैसे उत्तररामचरित का अन्त सुखान्त होने पर भी करुण को अङ्गी माना जाता है।

अलङ्कार

इस कथा में अर्थान्तरन्यास अलङ्कार का भी प्रयोग किया गया है। जैसे-

समधिकतरं निशिता जातास्तस्य कटाक्षपाताः। भवांस्तु जानात्येव उपदिशति कामिनीनां यौवनमद एव ललितानि। [24]

प्रथमपङ्क्ति में कही विशेष बात को द्वितीय पङ्क्तिगत सामान्य बात से समर्थित किया गया है। द्वितीय पङ्क्तिगत सामान्य उक्ति काव्यप्रकाश और साहित्यदर्पण में अगूढव्यङ्ग्यालक्षणा के उदाहरण के रूप में आई है। उत्प्रेक्षा, उपमा, अनुप्रास आदि अलङ्कार तो लेखक की भाषा में सहज मिल जाते हैं।

सम्प्रेषण

कथा में रघुवीर का एक प्राणी के साथ अतिशय मोह का वर्णन है जिसके वियोग में वह विक्षिप्त सा दिखता है, किन्तु कहानी के अन्तिम भाग में रहस्य खुल जाने के बाद ऐसा लगता है कि वह स्वयं विक्षिप्त नहीं अपितु उसकी कहानी के श्रोता रहमान को मूर्ख बना रहा है। उसने जानबूझकर ऐसी भाषा का प्रयोग किया है, जिससे कि कथा में रहस्य बना रहे और सुनने वाला उसके दुःख में स्वयं दुःखी हो परन्तु अन्त में स्वयं को ठगा सा महसूस करता है।

कथा में लेखक ने रहस्य को बचाने का अन्त तक प्रयास किया है, जिसमें वह अत्यन्त सफल हुआ है। कथा के अन्त में रहस्य खुल जाने पर पाठक चमत्कृत सा महसूस करता है और पूरी कथा पर विचार करने को विवश हो जाता है।

संदर्भ सूची

1. स्मितरेखा, पृ. 74
2. स्मितरेखा, पृ. 74
3. स्मितरेखा, पृ. 79
4. स्मितरेखा, पृ. 79
5. स्मितरेखा, पृ. 74
6. स्मितरेखा, पृ. 75
7. स्मितरेखा, पृ. 75
8. स्मितरेखा, पृ. 79
9. स्मितरेखा, पृ. 79
10. स्मितरेखा, पृ. 75
11. स्मितरेखा, पृ. 78
12. स्मितरेखा, पृ. 80
13. अत्रत्या जनाः स्वैः नामभिः रामं वा हनुमन्तं वा समृद्धिं वा सम्पत्तिं वा कृष्ण वा बलभद्रं वा ब्रह्म वा ब्रह्माणं वा तैस्तैस्तद्भवैः शब्दैर्वहन्ति, तथैव अत्रत्यानि भवनानि राजमार्गाश्च नामभि रामायणस्य महाभारतस्य च पात्राणि प्रतिनिधीकुर्वन्ति। – स्मितरेखा, पृ. 74
14. वहीं, पृ. 75
15. वहीं, पृ. 82
16. स्मितरेखा, पृ. 92
17. कित्तिफोमो वर्त्तते सर्वथा एकाकी ..... समग्रा श्रीदेवगता। – स्मितरेखा, पृ. 76
18. स्मितरेखा, पृ. 76
19. स्मितरेखा, पृ. 74
20. स्मितरेखा, पृ. 78
21. स्मितरेखा, पृ. 82
22. स्मितरेखा, पृ. 92
23. स्मितरेखा, पृ. 75
24. स्मितरेखा, पृ. 100